रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id : - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

:- ढोला मारू रा दूहा :-

- ढोला मारू रा दूहा – राजस्थान का प्रसिद्ध लोककाव्य है
- नायक – ढोला नायिका – मारू
- रचयिता – कुशललाभ
- ढोला की आयु – 3 वर्ष मारवणी 1½ वर्ष
- मुख्य रस श्रृंगार रस का वियोग रस
- ऋतुओं का वर्णन →
- अतिश्योक्ति, मानवीकरण, अनुप्रास, विभावना
- ढोला मारू रा दूहा – मे लोकजीवन की सफल अभिव्यक्ति हुई है –

लौकिक साहित्य → ① सामान्य जन भाषा का साहित्य

② लोकगाथा का सर्जक अपरिचित अज्ञात होता है

③ प्रमाणिकता पर सन्देह होता है

④ लोकगाथा पर अंचल प्रदेश का प्रभाव होता है

⑤ स्वजीयता का प्रभाव

⑥ लोक संस्कृति, खानपान, मूल्य,

⑦ लोकजीवन के मूल्य, ऋतुऐं,

⑧ वनस्पती, तीज त्यौहार,

- मारवणी का वियोग वर्णन –

① ऋतुओं का वर्णन

② प्राकृतिक प्रतिको का प्रयोग,

③ मानवीय संवेदनाओं का वर्णन

④ मानवीय सम्बन्धो का वर्णन

मोबाइल : 93...
पु/2008-09
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

DATE
PAGE

ढोला मारू रा दूहा राजस्थान की प्रेमाख्यान परम्परा का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है →

ढोला मारू रा दूहा राजस्थानी मे रचित डिंगल का एक अत्यन्त जनप्रिय प्राचीन लोक काव्य है

① संवेदनाओ का महत्व / मार्मिकता

② यह प्रेमाख्यानक काव्य दूहा छंद

③ ऋतुओ का वर्णन

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

कबीर

परिचय → जन्म 1456 काशी मे

देहावसान संवत 1575 मगहर मे

★ कबीर केवल कवि नही मानवता के पोषक थे

★ मध्यकाल के क्रान्तिपुरुष कबीर थे।

★ ज्ञानमार्गी शाखा के सर्वप्रमुख और प्रतिनिधि महाकवि के रूप मे विख्यात है।

पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार
ताते यह चाकी भली पीसि खाइ संसार

काव्यगत विशेषताए → कबीर की कविता का प्रतिपाद्य मानव जीवन और उसके समस्त व्यापार थे।

★ आध्यात्मिक रस की प्रधानता

★ कबीर के समस्त साहित्य मे ग्रन्थ 57

★ गुरु महिमा / संत महिमा / सत्पुरुष निरूपण, योगाभ्यास, भक्ती की महिमा, सत्य वचन, माया का निरूपण, नाम सुमिरन की महिमा / सत्संगति के लाभ

★ आलोचनात्मक अभिव्यक्ति / स्पष्ठवादिता,

★ मानवतावाद के पोषक

★ कबीर का शिल्प सरल, सहज और सहजग्राह्य

★ कबीर की भाषा सांकेतिक और प्रतीकात्मक है

★ युग के प्रतिनिधि कवि थे

पि. रं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

Q कबीर की भक्ति पद्धति को सोदाहरण समझाइ

भक्ति का अर्थ व स्वरूप → रामानुजाचार्य के अनुसार परमात्मा के निरन्तर स्मरण को ही भक्ति कहते हैं।

व्यास के अनुसार — प्राणिधान वह भक्ति है जिसके द्वारा परमेश्वर उस योगी पर कृपा प्रदान करते तथा उसकी इच्छाओं की पूर्ति निमित उसे वरदान देते।

पतंजली के अनुसार → प्राणिधान वह भक्ति है जिसमे इन्द्रिय भोगादिक सम्पूर्ण फलाकांक्षो का त्याग करके सब कर्म उस परमपुरूष को समर्पित कर दिये जाते हैं।

कबीर की भक्ति →

विशेषताये —

(i) ईश्वर की व्यापकता एवं एकता
(ii) ईश्वर के नाम स्मरण पर बल
(iii) सदाचरण पर बल
(iv) आत्मनिवेदन
गुरू महिमा
सांसारिक नश्वरता का चित्रण
हठयोगी साधना

(1) निर्गुण भक्ति
(2) साकार भक्ति
(3) मुक्ति
(4) सती और शूर
(5) अनन्य भाव
(6) विरह
(7) निष्काम भाव
(8) साधक

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

कबीर निर्गुण भक्तिधारा के सर्वोच्च कवि -

भक्ति के दो पोइन्ट आएगे।

① निर्गुण राम निर्गुण राम जपहु रे भाई
अविगत की गति लखई न जाई

② जल मे कुंभ कुंभ मे जल है बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहि समाना यहि तथ कथ्यो ग्यानी

③ कस्तूरी कुंडलि बसै मृग ढूँढै वन माहि
ऐसे घट-घट राम है दुनियाँ देखै नाहि

④ जाके मुँह माथा नही नाही रूप कुरूप
पुहुप बास ते पातरा ऐसा तत्व अनूप

⑤ पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय

इस प्रकार स्पष्ट है कि कबीर ने एकमात्र निराकार ईश्वर को सत्य बतलाकर उसी की भक्ति करने का संदेश दिया है और उसके लिए मन, शरीर, आचरण पवित्रता एवं साधनो की शुद्धता पर बल दिया है। इनकी भक्ति भावना एक उच्चकोटि के साधक की सच्ची साधना परिलक्षित होती है।

मोबाइल : 931...
.../जयपुर/2008-09
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

कबीर समाज सुधारक के रूप मे

जाति पांति पूछे नहि कोई
हरि कूँ भजै सो हरि का होई

- जाति को महत्व नही कर्मों को महत्व
- मूर्तिपूजा का प्रबल विरोध किया और कहा कि
- भक्ति भावना के पोइन्ट ही।

कबीर के काव्य की विशेषताए

भावपक्ष

- निर्गुण ईश्वर की उपासना
- भक्ति भावना
- संयोग एवं वियोग की गहन अनुभूति
- प्रेम तत्व का निरूपण
- रहस्यवादी भावना
- आध्यात्मिक साधना
- समाज सुधारक के रूप मे

कलापक्ष

1. कबीर की भाषा (पंचमेली भाषा)
2. छन्द विधान
   (i) साखियों - दोहा छन्द
3. अलंकार विधान
   अर्थ / शब्द अलंकार

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

नामदेव :- संतवाणी

जन्म - 1270 ई.   देहावसान - 1350 ई.

मराठी और हिन्दी मे समान रूप से रचना करने वाले उत्तर और दक्षिण के प्रसिद्ध संत हुए है मराठी अंभगो और हिन्दी के पदो की रचना करके अपने जीवनकाल मे ही यशस्वी हो चुके है

नामदेव महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत है उन्होने हिन्दी मे भी काव्य रचनाएँ की है इसलिए वे हिन्दी साहित्य के इतिहास मे भी कवि व संत के रूप मे जाने जाते है

भक्ति भावना → (1) निर्गुण सम्प्रदाय के प्रवर्तक
(2) नाम- स्मरण का बहुत महत्व है
(3) माया से मुक्ति प्रभु की कृपा से
(4) माया का प्रभाव अत्यधिक
(5) जाति-पाति का प्रबल विरोध
(6) बाह्य आडम्बरो का विरोध
(7) राम की प्राप्ती का पहलाउपाय आत्म-दर्शन
(8) जीवन / जगत की नश्वरता
(9) लोभ, मद, अहंकार, काम, क्रोध को हानिकारक

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

" मलिक मुहम्मद जायसी "

जन्म - 1550 देहावसान - 1600

परिचय → जायसी प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि और सर्वश्रेष्ठ कवि थे इनको अमेठी राजघराने ने पर्याप्त सम्मान दिया। यद्यपि ये काने और कुरूप थे फिर भी प्रतिभा के धनी थे।

रचनाएं ✱ इनका जीवन्त प्रमाण इनकी कृति पद्मावत है
अखरावट, आखिरीकलाम,
✱

काव्य कला

1) पद्मावत इतिवृत्तात्मक होते हुए भी रसात्मक है
इसमें आदि वस्तु वर्णन इसका प्रमाण है दीप नगर राज भवन दुर्ग सरोवर यात्रा सरोवर समुद्र आक्रमण युद्ध मंत्रणा दूत प्रेषण पुत्र जन्म विवाह जल क्रीडा रूप सौन्दर्य और संयोग वियोग का विस्तृत वर्णन मिलता है

2) जायसी प्रकृति सौन्दर्य के पारखी थे

3) पद्मावत श्रृंगार रस प्रधान काव्य है

4) जायसी की भाषा अवधी है

5) जायसी का विरह वर्णन तो विशेषकर नागमती का हिन्दी की अद्वितीय वस्तु है

मोबाइल : 9314618091
/2008-09
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

जायसी के काव्य की विशेषताए

नागमती वियोग खण्ड के आधार पर जायसी का विरह वर्णन

* बारहमासा पद्धति पर आधारित वियोग वर्णन
* लोक संस्कृति त्यौहारो का वर्णन
* शुक्ल — नागमती का विरह हिन्दी साहि की अद्वितीय वस्तु है वह एक भारतीय नारी का विरह है जो राजमहलो और रनिवासो को छोड़कर सामान्य नारी की भाँति वन-वन भटकती फिरती है और वृक्ष लता और पशु पक्षियो से पूछती फिरती है और अपनी व्यथा को दूसरो से व्यंजित करती फिरती है

विरह वर्णन की विशेषताएं :-

(1) प्रेमजनित व्यथा की अधिकता
(2) विरह ताप का प्राबल्य
(3) दयनीयता
(4) त्यौहारो पर दुःख की अधिकता
(5) शारीरिक कृशता
(6) नागमती पर प्रकृति का प्रभाव
(7) प्रकृति की सहानुभूति
(8) रानी होकर भी साधारण नारी
(9) फारसी प्रभाव

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(५)

सूरदास :-

जन्म - 1540 देहावसान - 1620

परिचय :- महात्मा सूरदास का जन्म रुनकता नामक ग्राम मे हुआ। ये सारस्वत ब्राह्मण जनश्रुति के अनुसार इन्हे जन्मान्ध माना जाता है

गुरु - वल्लभआचार्य

रचनाए → सूर-सागर, सूर सारावली, साहित्य-लहरी इनके प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ है

* सूरदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति सगुणाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि और सर्वश्रेष्ठ कवि है।
* इन्होने कृष्ण की बाल-लीला रूप माधुरी
* इनके काव्य मे वात्सल्य और श्रृंगार रस की प्रमुखता रही है।
* बाल्यकाल और यौवनकाल के जीवन की रमणीयता को उन्होने नाना मनोरम परिस्थितियो के विशद चित्रण द्वारा दिखाया है।
* इनकी भक्ति सख्य भाव की है।
* निर्गुण का खण्डन कर सगुण की स्थापना करने मे

सूरदास का भ्रमरगीत → इस विरह वर्णन मे सूर ने मानव मन की विविध दशाओ व भावो - प्रेम, विरह, दैन्य आतुरता, प्रतीक्षा, खीझ, उपालंभ, इत्यादि स्वाभाविक एवं मार्मिक चित्रण किया है।

* उद्धव जी गोपियो को बार-बार निर्गुण ब्रह्म को अपनाने को कहते है तो गोपियाँ इन पर व्यंग्य बाण छोडने लग जाती है।

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(5)

भावपक्ष → सूर का वात्सल्य वर्णन :-

वात्सल्य का संयोग पक्ष

(1) बालोचित वेशभूषा
(2) बालक की क्रीड़ाओं का चित्रण
(3) बालक के मनोभावों का चित्रण
(4) बालक के उत्सवों एवं संस्कारों का चित्रण
(5) गोचारण सम्बन्धी निरूपण
(6) बालहठ का सजीव चित्रण

वात्सल्य का वियोग पक्ष

कृष्ण जब मथुरा चले जाते है तब यशोदा, गोपियों विरह का वर्णन

कलापक्ष → ① भाषा ब्रज

② अलंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

रसमयता, भावप्रवणता, सरलता, हृदय को छूने की प्रभावी शक्ति

③ माधुर्य प्रसाद गुण

④ छन्द विधान

नि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

गोस्वामी तुलसीदास :-

जन्म - 1554 देहावसान - 1680

परिचय → हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ महाकवि तुलसी सगुण रूपधारी राम के आराधक थे इनके पिता का नाम आत्माराम और माता हुलसी था बचपन मे ही माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण गुरु नरहरिदास ने ही इनका पालन-पोषण किया गृहस्थ आश्रम मे प्रविष्ट होने के बाद ये पत्नी के प्रति इतने आसक्त हो गये कि एक बार उसके मायके चले जाने पर भी पीछे हो लिये। इस पर पत्नी प्रेम ईश्वरीय प्रेम मे बदल गया।

रचनाएँ → रामचरितमानस, गीतावली, विनय-पत्रिका, कृष्ण गीतावली, दोहावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल और रामलला नहछू प्रमुख है

रामचरितमानस → * रामायण के नाम से प्रसिद्ध
* सात सोपनो मे विभक्त है
* राम जन्म से लेकर रावण वध तक की कथा
* यह प्रबन्धकाव्य है
* इसमे शील, शक्ति, और सौन्दर्य के आगार मर्यादा पुरुषोत्तम, लोक रक्षक राम की कल्पना की है

144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित ... एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राईं का बास, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

7

तुलसी के काव्य की विशेषताएं

भाव पक्ष

1. रामचरित का सरस वर्णन
2. समन्वयवादी दृष्टिकोण
3. लोकमंगलवादी दृष्टिकोण
4. शील, शक्ति, सौन्दर्य का स्वरूप
5. आदर्शों की स्थापना

कला पक्ष

1. भाषा शैली
2. छन्द विधान
3. रस योजना
4. अलंकार योजना
5. काव्यरूप

विनयपत्रिका

* तुलसीदास जी द्वारा रचित गीतिकाव्य है
* विविध भावों का संचारण किया है इसमें - चिंता, अमर्ष, गर्व, विषाद, आदि विभिन्न भाव
* इसमें शांत ~~भावनाएं~~ रस की प्रधानता
* 279 पद है
* कलयुग से पीड़ित होकर राम को याचना विनती करी है
* सब देवता की स्तुतियाँ है

जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(8)

तुलसी के काव्य मे निहित समन्वय भावना

(1) शैव एवं वैष्णव का समन्वय
(2) वैष्णव एवं शाक्त का समन्वय
(3) अद्वैतवाद एवं विशिष्टाद्वैतवाद मे समन्वय
(4) ज्ञान एवं भक्ति मे समन्वय
(5) सगुण एवं निर्गुण मे समन्वय
(6) नर और नारायण का समन्वय
(7) ब्राह्मण एवं शूद्र का समन्वय
(8) गार्हस्थ्य एवं वैराग्य मे समन्वय
(9) राजा प्रजा मे समन्वय
(10) पारिवारिक क्षेत्र मे समन्वय

Q जनक की पुष्प वाटिका तथा राम सीता का वर्णन

Q माता गौरी का पूजन सीता द्वारा
Q सीता के आभूषणों का स्वर
Q राम के सौन्दर्य का वर्णन सखियों द्वारा।
Q आँखो के द्वारा सौन्दर्यवर्णन शब्दो से नहीं
Q माँ गौरी का आशीर्वाद प्राप्त होना।

144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(9)

मीरा :-

जन्म - 1555 देहावसान - 1620

परिचय :- मीरा का जन्म कुड़की नामक ग्राम मे हुआ। बचपन मे ही मीरा की माता का देहान्त हो जाने के कारण इनका लालन-पालन दूदा जी के पास मेड़ता मे हुआ था। यह अपने पिता रत्नसिंह की इकलौती पुत्री थी। श्री कृष्ण के साथ बचपन का प्रेम धीरे-धीरे अटल अनुराग के रूप मे परिवर्तित हो गया। मीरा का विवाह चित्तौड के राणा-सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ। वह इस वैवाहिक-सुख का उपभोग अधिक नही कर सकी विवाह के कुछ वर्ष पश्चात ही उसे वैधव्य ने आ घेरा। अब तो वह कृष्ण के प्रेम मे और अधिक रंग गई। भक्ति ही उसके जीवन का संबल बन गई। कृष्ण को उसने पति के रूप मे ग्रहण कर लिया। उसने अपना सर्वस्व कृष्ण पर ही न्यौछावर कर दिया।

रचनाए →
1. नरसीजी री मायरो
2. गीत गोविन्द की टीका
3. मीराबाई का मलार
4. राग गोविन्द
5. सोरठ के पद
6. मीरानी
7. मीरा के पद

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(16)

मीरा का काव्य सौन्दर्य :-

काव्यपक्ष

(1) भाषा - ब्रज, राजस्थानी
- गुजराती भाषा

भावप्रवणता, प्रवाहशीलता, सहज-अलंकृति, तथा संगीतात्मकता,

(2) रस व्यंजना

(3) अलंकार विधान - शब्द / अर्थ

(4) काव्यगुण - प्रसाद, माधुर्य

(5) शैली - रहस्यवादी शैली

(6) गीतिकाव्य - (1) अनुरागमयी
(2) विषादमयी

भावपक्ष

भक्तिभावना

(1) निर्गुण - सगु भक्ति

(2) रहस्यात्मक भ

(3) पति रूप में उपा

(4) समर्पण व आत्म भाव की अभि

(5) कृष्ण के कार्यों गुणगान

(6) शरणागत वत्सल

(7) प्रेमानुभूति की गहनता

(8) कृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन

मोबाइल : 9314618091
...पुर/2008-09
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(1)

:- रसखान :-

जन्म - 1548 ई.   देहावसान - 1...

हिन्दी कृष्णकाव्य धारा मे कृष्णभक्त कवि रसख... का महत्वपूर्ण स्थान है वे स्वच्छंद काव्यधारा के... थे तथा उन्होने वल्लभाचार्य के पुत्र स्वामी विठ्ठल... का शिष्यत्व ग्रहण कर एक नया उदाहरण प्रस्तु...

मुसलमान होते हुए भी उन पर साम्प्रदायि... संकीर्णता हावी न हो सकी

लौकिक और अलौकिक प्रेम ही रसखान के काव्य का मूल आधार है।

रचनाएँ → सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दान ल...

विश्वनाथ प्रताप द्वारा संकलित रसखान ग्रन्थावली

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोसियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

रसखान का काव्य सौन्दर्य :-

कलापक्ष

भाषा – ब्रजभाषा

अलंकार –

शब्दालंकार / अर्थालंकार

छन्दों का स्वाभाविक प्रयोग

भावपक्ष

(1) प्रेम की अनन्यता

(2) भाव – विह्वलता

(3) उपास्य के प्रति आसक्ति

रस खान वास्तव मे रस की खान हैं

मोबाइल: 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

रज्जब

जन्म सवत 1624

देहावसान 1746

संत दादूदयाल के शिष्यो मे रज्जब का ~~स्थान~~ नाम बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है गुरु के प्रिय शिष्य होने के कारण रज्जब दादूदयाल के साथ ही रहा करते थे

रज्जब का जन्म सांगानेर (जयपुर) के प्रतिष्ठित पठान परिवार मे हुआ था। 1644 मे वह विवाह करने जा रहे थे कि मार्ग मे आमेर के पास इनकी मुलाकात संत दादूदयाल जी से हो गयी दादू जी के उपदेशो का रज्जब पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि वे उनकी शरण मे आ गये दूल्हे का वेश उतारकर वे वैरागी हो गये और विवाह के लिए इनका छोटा भाई चला गया।

वह गुरुभक्ति और भगवद्भक्ति को एक ही मानते थे

शरु दादू जी की मृत्यु के पश्चात रज्जब ने अपने नेत्रो को बहुत कम खोला था उन्हे लगता था कि गुरु के बिना इस संसार मे कुछ नही है

रज्जब की कृतियाँ — बानी, सर्वांगी

↓

5 हजार छन्द

अंगवधू → श्रेष्ठ रचना

रजि. सं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

DATE / /
PAGE

नानक

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार - मध्ययुग के जिन महात्माओं ने भारतीय धर्म साधना और समाज व्यवस्था को गम्भीर भाव से प्रभावित किया है उनमे गुरुनानक देव का स्थान प्रमुख है

जन्म - सम्वत 1526 पंजाब के तिलवंडी गाँव
पिता - कालूराम खत्री वर्तमान मे ननकाना साहिब

गुरु ग्रन्थ साहिब → भक्ति भाव से विह्वल
└ महला शीर्षक प्रकरण मे इनकी वाणी संग्रहित

साकारोपासना, अवतारवाद, मूर्तिपूजा सामाजिक - विभेद ऊँच - नीच, वर्ण व्यवस्था — विरोध करते थे।

इनका धर्म मानव मन मे एक अद्भुत शक्ति का संचार करता है जिससे उदारता निश्छलता कोमलता विनय आदि भावनाओं के साथ अटूट निष्ठा, अद्भुत त्याग भावना अनुपम सहनशक्ति का ओजपूर्ण समन्वय है।

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

DATE / /

PAGE

:— दादू दयाल :—

जन्म - 1601 गुजरात के अहमदाबाद नामक नगर

राजस्थान - जयपुर राज्य मे स्थित नरैना नामक स्थान

कुछ लोग - ब्राह्मण कुछ धुनिया जाति का बताते है

* गृहस्थ और बाल बच्चो वाले थे।

* बुड्ढन बाबा या वृद्धानन्द नामक गुरु से दीक्षा ली

* सन्तदास / जगन्नाथ ने इनके वाणी मे संग्रह

* आत्म समर्पण मे विश्वास

* विनम्र और स्नेहशील बने रहते है

नं. 144/जयपुर/2008-09

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

मोबाइल : 9314618091

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege roopnagarh@...

पूर्णांक - 100

पाठ्यक्रम - हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास

1) दो प्रश्न हिन्दी के उद्भव और विकास तथा हिन्दी भाषा परिवार से सम्बन्धित

(अ) हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
(ब) ब्रज अवधी और राजस्थानी का सामान्य परिचय
(स) राजस्थानी भाषा और उसकी उपभाषाओं का सामान्य परिचय

(40)

(2) तीन प्रश्न हिन्दी साहित्य के इतिहास पर

(अ) काल - विभाजन, नामकरण, कालगत परिस्थितियाँ
(ब) प्रवृत्तियां एवं प्रमुख रचनाकार
(स) आधुनिक काल मे कविता का विकास

(1) भारतेन्दु काल, द्विवेदी काल, छायावादी काल
नई कविता विकास

(60)

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति और विकास

संसार मे लगभग – 3000 भाषाएँ और बोलियाँ उपलब्ध

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- भाषा के आधार पर यदि भारत की जातियो का वर्गीकरण किया जाए तो कहा जा सकता है कि एक ओर आर्य जातियां है वही दूसरी ओर द्रविड जातियाँ। भाषाविदों ने जातियो के आधार पर भारत के भाषा समूह को भारत – यूरोपीय भारोपिय परिवार समूह मे रखा है।

आर्य भाषा
- यूरोपीय आर्य भाषाएं
- भारत ईरानी आर्य भाषाएं
  - ① ईरानी ② दरद ③ भारतीय भाषाएं

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं
- वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक)
- लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं
- पालि भाषा (500 ई.पू. से 1 ई. तक)
- प्राकृत भाषा (1 ई. से 500 ई. तक)
- अपभ्रंश

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

प्राकृत भाषा → भेद → (क) शौरसेनी → मथुरा व शूरसेन के आसपास की बोली थी

(ख) पैशाची → महाभारत मे पिशाच जाति का उल्लेख है

(ग) महाराष्ट्री → प्राकृत महाराष्ट्री साहित्य की दृष्टि से बहुत धनी है।

(घ) अर्धमागधी → प्राचीन कोसल के आस-पास की भाषा

(ङ) मागधी → मगध के आसपास की भाषा है

(च) कैकय → प्राचीन कैकय प्रदेश की भाषा - वर्तमान मे लहंदा पाकिस्तान मे बोली जाती है

(छ) टक्क → मूलतः पंजाबी का क्षेत्र है

(ज) खस → पहाड़ी बोलियो का विकास

(झ) ब्राचड → अपभ्रंश की पूर्वजा प्राकृत

अपभ्रंश → अपभ्रंश का अर्थ है गिरा हुआ अथवा बिगड़ा हुआ प्राकृत की तुलना मे भी जिस भाषा मे ध्वन्यात्मक तथा व्याकरणिक परिवर्तन हो गया था उसे पंडितो ने अपभ्रंश या अपभ्रष्ट नाम से अभिहित किया। अपभ्रंश प्राकृत तथा आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ के बीच की कड़ी है भाषा के रूप मे अपभ्रंश नाम का प्रयोग छठी शताब्दी से मिलने लगता है।

अपभ्रंश की विशेषताए → ① अ का पूर्वी तथा पश्चिमी अपभ्रंशो मे संवृत - विवृत का भेद था। किन्तु उसको उच्चारण हिन्दी अ के प्रयोग था ... का लिखने मे प्रयोग

② ...

हिन्दी वियोगात्मक भाषा है

अवहट्ठ → भाषा परिवर्तनशील है। कोई भाषा जब साहित्य का माध्यम होकर एक प्रतिष्ठित रूप ग्रहण करती है और व्याकरण के रूप में बंध जाती है जब वह जनभाषा से दूर हो जाती है अपभ्रंश की भी यही गति हुई अपभ्रंश के ही परवर्ती या परिवर्तित रूप को अवहट्ठ कहा गया है।

11 वी से 14 वी के अपभ्रंश कवियो ने अपनी भाषा को अ...

सर्वप्रथम प्रयोग → ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने अपने वर्ण रत्नाकर

(i) अब्दुर रहमान - संदेशरासक (ii) विद्यापति - कीर्तिलता

विशेषता → स्वर शब्दो मे संधि या संकोच अवहट्ठ की महत्वपूर्ण विशेषता जैसे - धारित्री - धरती / गृहिणी ...

पुरानी हिन्दी

8 वी 9 वी सदी के सिद्धो की भाषा मे हमे अपभ्रंश से निकलती हुई हिन्दी स्पष्ट दिखलाई देती है।

रामचन्द्र शुक्ल ने अपने "हिन्दी साहित्य के इतिहास" मे सिद्धो की वाणियो से शुरू किया है।

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
मोबाइल : 9314618091
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं और उनका वर्गीकरण

① प्राचीन हिन्दी - 1000 – 1400
② मध्यकालीन हिन्दी - 1400 – 1850
③ आधुनिक हिन्दी - 1850 – अब तक

हिन्दी की उपबोली

पश्चिमी हिन्दी
- आकारबहुला
- ओकारबहुला
  - (1) कौरवी / खड़ीबोली
  - (2) ब्रजभाषा
  - (3) हरयाणवी (बांगरू)
  - (4) बुंदेली
  - (5) कन्नौजी

पूर्वी हिन्दी
- ① अवधी
- ② बघेली
- ③ छत्तीसगढ़ी

राजस्थानी उपभाषा
- ① मारवाड़ी (प. राजस्थानी)
- ② मेवाती (उ. रा.)
- ③ जयपुरी (पू. रा.)
- ④ मालवी (द. रा.)
- ⑤ हाड़ौती
- ⑥

पहाड़ी हिन्दी
- ① पश्चिमी पहाड़ी
- ② गढ़वाली
- ③ कुमाऊंनी

बिहारी हिन्दी
- ① भोजपुरी
- ② मगही
- ③ मैथिली

अपभ्रंश		उपभाषाएं
शौरसेनी अपभ्रंश	→	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती
पैशाची अपभ्रंश	→	पंजाबी, लहंदा भाषाएं
खस अपभ्रंश	→	पहाड़ी हिन्दी ② नेपाली भाषा
ब्राचड़ अपभ्रंश	→	सिन्धी
मागधी अपभ्रंश	→	बिहारी, उड़िया,
अर्द्ध मागधी	→	पूर्वी हिन्दी
महाराष्ट्री	→	मराठी

पं. क्र. १४४/जयपुर/२००६-०७ मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मधु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी भाषा का उद्भव

① वैदिक संस्कृत – (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.)

② लौकिक संस्कृत – 1000 ई.पू. से 500 ई.पू.)

③ प्रथम प्राकृत / पालि भाषा – (500 ई.पू. से 0 ई.)

④ द्वितीय प्राकृत / शुद्ध-प्राकृत – (0 ई. से 500 ई.)

⑤ अपभ्रंश – (500 ई. से 1000 ई.)

⑥ हिन्दी – (1000 ई. से अब तक)

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति

(वै.सं.) सिंधु – नदी का नाम

(लौकिक सं.) सिंध – „

ईरानी / फारसी मे स का ह हो गया हिन्द – नदी का नाम

हिन्दीक – हिन्दी हिन्द का अर्थात सिंधु के आसपास का क्षेत्र

इसे प्रयोग लगा ईरानी को

भाषा के अर्थ मे हिन्दी शब्द का प्रयोग शरफुद्दीन यज्दी की रचना जफरनामा 1424 ई.

ई. ई. 144/जयपुर/2004-09

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

पश्चिमी हिन्दी — खड़ी बोली

खड़ी बोली कहने के कारण
(1) इसके वर्णों में खड़ी पाई की प्रधानता
(2) यह खरी अर्थात शुद्ध है
(3) यह खड़ी अर्थात कर्कश है

नामकरण → (1) खड़ी बोली – लल्लूलाल
(2) कौरवी – शुक्ल राहुल सांकृत्यायन
(3) टकसाली भाषा – गिलक्राइस्ट
(4) जनपदीय भाषा – सुनीति कुमार चटर्जी

खड़ी बोली के क्षेत्र → दिल्ली, मेरठ, आगरा, देहरादून, मुरादाबाद, मुजफ्फर नगर,

☆ मानक खड़ी बोली शुक्ल ने नाम

खड़ी बोली के साहित्य → नाटक, पवाड़ा, लोकगीत, सबरंग

☆ खड़ी बोली के प्रथम कवि अमीर खुसरो है

☆ दक्षिणी भारत मे खड़ी बोली मे रचना करने वाले मुल्लावजही

☆ खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना चन्द छन्द बरनन की महिमा

☆ खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य प्रिय प्रवास 1914 (हरिऔध)

साहित्यिक खड़ी बोली का विकास → (1) इंशाअल्ला खां (2) लल्लू लाल (3) सदल मिश्र

फोर्ट विलियम कॉलेज →

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
E-Mail Id : svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी भाषा :- 8

देवनागरी लिपि →

ब्राह्मी – गुप्तलिपि – सिद्धमातृका – कुटिल लिपि – नागरी

ब्रजभाषा → आगरा, मथुरा, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, बरेली, बदायूं

बुंदेली → झांसी, जालौन, ओरछा, सागर, हमीरपुर, सिवनी, नरसिंहपुर, होशंगाबाद

कन्नौजी → इटावा फर्रुखाबाद, मैनपुर, शाहजहाँपुर, पीलीभित, हरदोई

बांगरू → हरियाणा, दिल्ली के आसपास का क्षेत्र

अवधी → कानपुर, लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली, फैजाबाद, फतेहपुर, गोंडा, प्रतापगढ़ सुल्तानपुर

बघेली → बघेल खण्डी भी कहा जाता है इसका केन्द्र है रीवा, मेहर, नागौद, शहडोल, सतना

छतीसगढ़ी → बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, राजनांदगांव, कांकेर, कोरिया, सरगुजा

मैथिली → विद्यापति मैथिल कोकिल दरभंगा, मुंगेर

मगही → पटना, गया, पलामु, भागलपुर, सारन, हजारी बाग

भोजपुरी → बनारस, गाजीपुर, जौनपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, बलिया, गोरखपुर, चंपारन सारन

पं. 141/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id:- svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी भाषा :-

देवनागरी लिपि →

ब्राह्मी — गुप्तलिपि — सिद्धमातृका — कुटिल लिपि — नागरी

ब्रजभाषा → आगरा, मथुरा, अलीगढ़, एटा, हाथरस, फिरोजाबाद, बरेली, बदायूँ

बुंदेली → झाँसी, जालौन, ओरछा, सागर, सागर, सिवनी, नरसिंहपुर, होशंगाबाद

कन्नौजी → इटावा, फर्रूखाबाद, मैनपुर, शाहजहाँपुर, पीलीभीत, हरदोई

बांगरू → हरियाणा, दिल्ली के आस-पास का क्षेत्र

अवधी → कानपुर, लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली, फैजाबाद, फतेहपुर, गोंडा, प्रतापगढ़ सुल्तानपुर

बघेली → बघेलखण्डी भी कहा जाता है इसका केन्द्र है रीवा, मैहर, नागौद, शहडोल, सतना

छत्तीसगढ़ी → बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, राजनांद, कांकेरी, कोरिया, सरगुजा

मैथिली → विद्यापति मैथिल कोकिल दरभंगा, मुंगेर

मगही → पटना, गया, पलामू, भागलपुर, सारन, हजारीबाग

भोजपुरी → बनारस, गाजीपुर, जौनपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, बलिया, गोरखपुर, चंपारन, सारन

44/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

PAGE 9

...पाली → शिमला, मण्डी, चम्बा, जोनसार, सिरमौर

...ढवाली → उत्तरकाशी, बद्रीनाथ, पौडी, गढवाल

कुमाउनी → नैनीताल अल्मोडा रानी खेत

र. सं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

ब्रज भाषा का परिचय

अर्थ पशुओ गायो का समूह या चारागाह अर्थ है पशुपालन की प्रधानता के कारण ब्रज कहलाता है

उद्भव → शौरसेनी अपभ्रंश

क्षेत्र → ब्रजभाषा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी एटा, बदायू बरेली,

बोलने वालो की संख्या → डेढ करोड

साहित्य → अत्यधिक रचनाए

प्रमुख कवि → सूरदास, नंददास, रसखान, घनानंद, देव, बिहारी, केशव, भारतेन्दु जगन्नाथ रत्नाकर, सत्यनारायण कविरत्न

विशेषताए → ① इसकी ओकारंत प्रवृत्ति आयो, गयो

② मैं के स्थान पर हौं का प्रयोग

③ त्यु के स्थान पर त्यौं का प्रयोग

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

मोबाइल : 9314618091

(संचालित मनु शांतिपाल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

अवधी का परिचय :-

अर्थ - इस बोली का केन्द्र अयोध्या है अवधी बना है

उद्भव विकास → अर्धमागधी अपभ्रंश (पाली से भी)

क्षेत्र → अवधी, लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ बाराबंकी

बोलनेवालों की संख्या - २ करोड़

साहित्य → साहित्य दृष्टि से समृद्ध
रामचरितमानस, पद्मावत

प्रमुख कवि → नूर मोहम्मद, मंझन, लालदास
नाभादास, अग्रदास, तुलसी, जायसी

अवधी भाषा के ध्वनि परिवर्तन

ण - न - गुण - गुन
य - ज योग - जोग
क - ग अग्र - अगा
ल - र अंजलि - अंजुरि
व - ब बाण - बान
ष - ख आशा - आखा

② दो विशिष्ट प्रत्यय
इया, वा

③ अवधी की कुछ सहायक क्रियाएँ

वर्तमान काल - अहइ, अहि, हहि आदि

भूतकाल - भा, भई, रहा रहे अहा अहे

भविष्यकाल - होब होबइ होयउ होइहि

④ सर्वनाम रूप

अन्य पुरुष → ऊ बा, ओ, उइ, ई
मध्य पुरुष → तू तै तुइ तोर तोहार
उत्तम पुरुष → मैं मइ मोर मोरि

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

रूपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण

① मारवाड़ी ② जयपुरी (ढूंढाड़ी) ③ मेवाती ④ मालवी

ना. बी. जा. जै. जो. बा. भा. सि.

(1) मेवाड़ी
(2) खेराड़ी (मेवाड़ी + ढूंढाड़ी + हाड़ौती)
(3) शेखावाटी (सीकर, चूरू, झुंझुनूं)
(4) थली – जैसलमेर, बीकानेर)
(5) वागड़ी → डूंगरपुर, बांसवाड़ा भीलों की भाषा
(6) नागौरी →
(7) देवड़ावाड़ी → सिरोही
(8) गोड़वाड़ी → गोड़वाड़ी (बीसलदेव रासो)
(9) बीकानेरी →

- कलात्मकता में इस भाषा का
- सर्वाधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली
- शुद्ध रूप जोधपुर
- जैन साहित्य,

ढूंढाड़ी → प्राचीनतम उल्लेख आठ देस गुजरी
जयपुर, अजमेर, टोंक, दौसा
संत दादू सम्प्रदाय की रचना
ब्रज और मालवी का प्रभाव
... का प्रयोग

उपबोलियां
① नागरचोल
② चौरासी
③ राजावाटी
④ काठेड़ी →
⑤ तोरावाटी →
⑥ हाड़ौती →

③ मेवाती → अलवर करौली भरतपुर

हरियाणवी ब्रज मरुभाषा का मिश्रण

पश्चिम राजस्थानी के मध्य सेतु का कार्य करती है

उपभाषाएं → ① राठी अहीरवाटी
② मेहाती
③ कठेर

मालवी ④

क्षेत्र – झालावाड़ कोटा
प्रतापगढ़ चित्तौड़गढ़
मराठी भाषा का प्रभाव

उपबोलियां → निमाड़ी
रागड़ी
सोंडवाड़ी, पाटवी, र...
रूपबाड़ी

कर्कश बोली

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

राजस्थानी भाषा के साहित्य

डिंगल	पिंगल
पश्चिमी रा. का साहित्यक रूप	पूर्वी रा. का साहित्यक रूप
चारण कवियों द्वारा उपयोग	भाट कवियों द्वारा उपयोग
गुर्जरी अपभ्रंश से निर्मित	शौरसेनी अपभ्रंश से निर्मित
अचलदास खींची री वचनिका	पृथ्वीराज रासो
ढोला मारु रा दूहा	खुमाण रासो
राजरूपक	वंश भास्कर
राव जैतसी री छंद	

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
मोबाइल : 9314618091
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege...

हिन्दी साहित्य का इतिहास :-

प्रथम प्रयास – गार्सा द तासी – इस्तवार द ला लितेरात्यूर ऐंदुई ऐ हिंदुस्तानी
ग्रियर्सन – द मॉडर्न वर्नेक्यूलर लिट्रेचर ऑफ हिन्दुस्तान।

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण

1) सर जॉर्ज ग्रियर्सन का काल विभाजन

(1) चारण काल (700 से 1300 ई. तक)
(2) पन्द्रहवीं सदी का धार्मिक पुनर्जागरण
(3) जायसी की प्रेम कविता
(4) ब्रज का कृष्ण संप्रदाय
(5) मुगल दरबार
(6) तुलसीदास
(7) रीतिकाल
(8) तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि
(9) अठारहवीं शताब्दी
(10) कंपनी के शासन में हिन्दुस्तान
(11) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान

मिश्रबंधुओं का काल - विभाजन :

(क) आरंभिक काल – पूर्वारंभिक काल 700 – 1343
उत्तरारंभिक काल 1343 – 1444

(ख) माध्यमिक काल – पूर्व माध्यमिक काल 1445 – 1560
प्रौढ़ माध्यमिक काल 1560 – 1680

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

(ग) अलंकृत काल — पूर्वालंकृत काल 1681 – 17..
उत्तरालंकृत काल 1791 – 18..
(घ) परिवर्तन काल 1890 – 1925
(ङ) वर्तमान काल 1925 – अब से.

आचार्य शुक्ल का काल विभाजन

(क) आदिकाल वीरगाथा काल 1050 – 1375
(ख) पूर्व मध्यकाल भक्तिकाल 1375 – 1700
(ग) उत्तर मध्यकाल रीतिकाल 1700 – 1900
(घ) आधुनिक काल गद्यकाल 1900 – अब ..

मिश्रबंधुओ का द्वितीय काल विभाजन

(क) आदिकाल (वीरगाथा का युग – 1050 – 1400
(ख) पूर्व मध्य युग (भक्ति का युग – 1400 – 1700
(ग) उत्तर मध्य युग (रीति ग्रंथ का युग – 1700 – 1900
(घ) आधुनिक युग (नवीन विकास 1900 से

आधुनिक काल → (1) पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) 1857 – 1900
(2) जागरण सुधार काल
द्विवेदी काल – 1900 से 1918
(3) छायावाद काल – 1918 – 1938
छायावादोत्तर काल
(अ) प्रगति प्रयोग काल 1938 – 1953
(ब) नवलेखन काल 1953 से अब तक

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
मोबाइल : 9314618091
रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: -

आदिकाल :- 1050 - 1375

अन्य नाम → (नामकरण)

- चारण काल - ग्रियर्सन
- आरंभिक काल - मिश्रबन्धु
- वीरगाथा - शुक्ल
- आदिकाल - द्विवेदी जी
- संधिकाल - रामकुमार वर्मा
- सिद्धसामन्तकाल - राहुल सांकृत्यायन
- बीजवपन काल - महावीर द्विवेदी
- वीरगाथा काल - सुन्दर दास
- वीरकाल - विश्वनाथ
- अपभ्रंश काल - धीरेन्द्र वर्मा

आदिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

1. रचनाओं की अप्रामाणिकता ⑦ युद्धों का वर्णन
2. सजीव युद्ध वर्णन ⑧ संकुचित राष्ट्रीयता
3. वीर एवं श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति
4. अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ⑨ लोकभाषा साहित्य
5. व्यापक राष्ट्रीयता का अभाव ⑩ ऐतिहासिकता
6. जन-जीवन का अभाव) की अपेक्षा कल्पना की प्रधानता

आदिकालीन साहित्य

सिद्ध साहित्य
- सरहपा - दोहकोश
- शबरपा - चर्यापद
- लुइपा
- डोम्बिपा - डोम्बि गीतिका
- कण्हपा / कुक्कुरिपा

जैन साहित्य
- भरतेश्वर - बाहुबली रास
- भरतेश्वर बाहुबली रास
- स्थूलिभद्र रास
- रेवन्तगिरि रास
- नेमिनाथ रास

नाथ साहित्य
- गोरखनाथ
- चर्पटनाथ
- चौरंगीनाथ

रासो साहित्य
- पृथ्वीराज रासो
- खुमाण रासो
- हम्मीर रासो
- बीसलदेव
- परमाल रासो
- विजयपाल रासो

लौकिक साहित्य
- ढोला मारू रा दूहा

गद्य रचनाएँ
- ① राउलवेल
- ② उक्ति व्यक्ति प्रकरण
- ③ वर्ण...

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
मोबाइल : 9314618091
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

1375 से 1700

भक्तिकाल :-

हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग

- निर्गुण भक्ति धारा
  - संत काव्य
    - ज्ञानाश्रयी
      - कबीर
      - रामानन्द
      - रैदास
      - गुरुनानक
      - हरीदास
      - दादूदयाल
      - सुन्दरदास
      - मलूकदास
      - नानकदेव
  - सूफी काव्य
    - प्रेमाश्रयी
      - जायसी
      - मुल्ला दाऊद
      - कुतुबन
      - मंझन
      - उसमान
- सगुण भक्ति धारा
  - राम भक्ति
    - तुलसीदास
    - रामानंद
  - कृष्ण भक्ति
    - सूरदास
    - मीराबाई
    - रसखान
    - अष्टछाप के कवि

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

... अजमेर-305814

E-Mail ...

भक्तिकाल की प्रवृत्तियाँ → (विशेषताएं)

(1) गुरु की महिमा
(ii) अहंकार का त्याग
(3) नाम की महिमा
(4) भक्ति की महिमा
(5) बहुजन हिताय
(6) लोक भाषा का प्रयोग
(7) वीर रस
(8) ग्रन्थ लेखन
(9) नीति का महत्व
(10) रीति

संत काव्य की प्रवृत्तियाँ → ① भावपक्ष सम्बन्धी निर्गुण उपासना
② रहस्यवाद ③ बाह्याडम्बर...
④ लोक कल्याण की भावना
⑤ नारी विरोध ⑥ प्रतीक योजना

सूफी काव्य की प्रवृत्तियाँ →

① भारतीय अद्वैतवाद का प्रभाव
② ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या की भावना को स्वीकार किया है
③ साधक महान है सभी कष्टों से लड़ा जाता है
④ सबके खुदा एक से है
⑤

सगुण काव्य की प्रवृत्तियाँ → ① कृष्ण राम लीला वर्णन
② कृष्ण भक्ति में वात्सल्य
③ राम का आदर्शात्मक रूप
④ प्राकृतिक सौन्दर्य
⑤

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
E-Mail Id: svmmcollege.roopangarh@gmail.com

रीतिकाल :-

नामकरण

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – रीतिकाल
प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – श्रृंगारकाल
मिश्रबन्धु – अलंकृत काल
रमाशंकर शुक्ल रसाल – कलाकाल
रामप्रसाद मिश्र – शास्त्रीय काल

रीतिकाल की प्रेरक परिस्थितियाँ

1. राजनीतिक परिस्थितियाँ
2. सामाजिक परिस्थितियाँ
3. धार्मिक परिस्थितियाँ
4. कलात्मक एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ

रीतिकाल की विशेषताएँ →

1. श्रृंगारिकता की भावना
2. आचार्यत्व का प्रदर्शन
3. आलंकारिकता
4. ब्रज भाषा की प्रधानता
5. वीरकाव्य
6. भक्ति और नीति

रीतिकाल की धाराएँ

रीतिबद्ध — रीतिसिद्ध — रीतिमुक्त

पं. सं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

DATE / /

PAGE 8

→ भारतेंदु युग :-

प्रवृत्तियाँ → (1) राष्ट्रीयता < देशप्रेम / राष्ट्रभक्ति

(2) सामाजिक-चेतना -

(3) भक्ति भावना — (1) निर्गुण (2) वैष्णव भक्ति (3) स्वदेशानुराग समन्वित ईश्वर भक्ति

(4) श्रृंगारिकता

(5) प्रकृति चित्रण

(6) हास्य व्यंग्य

(7) रीति निरूपण

(8) समस्यापूर्ति

भारतेंदु हरिश्चंद्र → 70 नाट्य कृतियाँ

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
E-Mail Id: svmmcollege...

आधुनिक काल

↓ भारतेन्दु युग

↓ द्विवेदी युग

↓ 1868–1900

1850–1855

→ प्रमुख कवि → (1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(2) बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन

(3) प्रतापनारायण मिश्र

(4) जगमोहन सिंह

(5) अम्बिकादत्त व्यास

(6) राधाकृष्ण दास

(7) अन्य

भारतेन्दु युग का गद्य साहित्य — नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना,

भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ →

आधुनिक काल (डॉ नगेन्द्र द्वारा)

↓

① पुनर्जागरण काल (भारतेंदु काल) → 1857 – 1900 ई.

② जागरण सुधार काल (द्विवेदी काल) → 1900 – 1918 ई

③ छायावाद – काल 1918 – 1938
→ प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा

④ छायावादोत्तर काल

(क) प्रगति प्रयोग काल) 1939 – 1953

(ख) नवलेखन काल) 1953 –

क्र. सं. 144/जयपुर/2006-07

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
मोबाइल : 9314618091
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id- ...

द्विवेदी युग :-

जागरण सुधार काल भी कहते है

* 1858 के विद्रोह के पश्चात महारानी विक्टोरिया के सद्भावपूर्ण घोषणा पत्र ने भारतीयो मे कुछ आशा जगाई थी किन्तु बाद मे वे आशाऐ खरी नही उतरी फलस्वरूप जनता मे असंतोष और क्षोभ की आग भड़कती चली गई

— भारतेन्दु युग मे जहा भारत की दुर्दशा का दुख प्रकट करके चुप रह गए वहॉ द्विवेदीकालीन कवि मनीषियो ने देश की दुर्दशा का दुःख प्रकट करके चुप रह गए वहॉ द्विवेदीकालीन कवि मनीषियो ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ-साथ देशवासियो को स्वतंत्रता प्राप्ती की प्रेरणा भी दी

द्विवेदी युग के कवि → शंकर, श्रीधर पाठक, हरिऔध, रामदेवीप्रसाद पूर्ण, रामप्रसाद शुक्ल स्नेही, गुप्त

गद्य साहित्य → नाट्य साहित्य, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, जीवनी, यात्रावृत, संस्मरण

निराला की कृतिया → अनामिका – 1922
परिमल – 1930
गीतिका – 1936
राम की शक्ति पूजा / सरोज स्मृति
तुलसीदास – 1938
कुकुरमुत्ता – 1942
अणिमा – 1943
बेला – 1946
नये पत्ते – 1946

मोबाइल : 9314618091
E-Mail Id: ...
रूपनगढ, अजमेर-305814

छायावाद 1918 - 1936

छायावाद का समय 1918 से सन् 1938 तक माना जा सकता है। रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद का आरम्भ सन् 1918 से माना है। इस काल के आस-पास साहित्य मे एक नए मोड का आरंभ हो गया था जो पुरानी काव्य पद्धति को छोडकर एक नई पद्धति के निर्माण का सूचक था

★ छायावाद युग की प्रमुख प्रवृति है - राष्ट्रीय और सांस्कृतिक काव्य का सृजन

★ छायावाद के इस काल मे कवित्व की दृष्टि से अनुभूति की तीव्रता सूक्ष्मता और अभिव्यंजना शिल्प के उत्कर्ष की दृष्टि से यह काव्य श्रेष्ठ है।

छायावाद के स्तम्भ कवि

प्रसाद — रचनाएं
- कामायनी (1935)
- वन मिलन (1909)
- प्रेमराज्य (1909)
- अयोध्या का उद्धार (1910)
- शोकोच्छ्वास (1910)
- वभ्रुवाहन (1911)
- कानन कुसुम (1913)
- प्रेम पथिक (1913)

पंत
- गिरजे का घण्टा
- उच्छ्वास 1920
- ग्रन्थि 1920
- वीणा 1927
- पल्लव 1928
- गुंजन 1932
- वीणा

निराला
- जुही की कली 1916
- अनामिका 1923
- परिमल 1930
- गीतिका 1936
- तुलसीदास 1937

महादेवी वर्मा
- नीहार 1930
- रश्मि 1932
- नीरजा 1935
- सान्ध्यगीत 1936

/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

छायावाद और उसके बाद

छायावादी काव्य की विशेषताएँ

(1) व्यक्तिगत स्वाधीनता की भावना

(2) रहस्यात्मकता

(3) रोमांटिक प्रेमभावना

(4) उन्मुक्त और गतिशील प्रकृति के आलंबन रू

(5) प्रकृति से साहचर्य प्रेम

(6) अतीतोन्मुखता

(7) स्वच्छंद कल्पना

(8) नारी के सौंदर्य रूप की अभिव्यक्ति

(9) रूप और भाषा की नवीनता

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मधु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
मोबाइल : 9314618091

:- प्रगतिवाद :-

जो काव्य मार्क्सवादी दर्शन को सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चला उसे प्रगतिवाद कहा गया। इसके विकास मे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ तो सहायक हुई साथ ही छायावाद की वायवी काव्यधारा भी इसमे सहायक सिद्ध हुई, उस समय राजनीतिक दासता देश मे एक और पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की शोषक शक्तियाँ अपना जाल फैला रही थी दूसरी और जन सामान्य के लिए अपार अभाव गरीबी, अशिक्षा असुविधा और अपमान की सृष्टि कर रही हैं।

युद्ध के दबाव म

:- नई कविता की प्रवृतियाँ :-

(1) यथार्थ चित्रण का आग्रह
(2) सूक्ष्म व्यंग्य तथा शैलीगत वैचित्र्य
(3) नए - नए अर्थों को ध्वनित करने वाले अभिनव प्रतीक विधान
(4) दो विश्वयुद्धो की पीड़ा
(5) सामाजिक आर्थिक वैषम्य पर चोट
(6) अस्तित्ववाद की अभिव्यक्ति
(7) नव मानववाद की और अग्रसरता
(8) साधारणीकरण तथा रसात्मकता का अभाव
(9) अकेलापन अजनबीपन
(10) व्यंग्यात्मक प्रवृति
(11) शिल्पगत प्रयोग
(12) विश्व मानव की प्रतिष्ठा के लिए प्रयास

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
मोबाइल : 9314618091
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com
रूपनगढ, अजमेर-305814

उपन्यास :–

प्रेमचंद पूर्व युग →

(भारतेन्दु युग)

वस्तुतः उपन्यास रचना की प्रेरणा हिन्दी मे बंगला और अंग्रेजी से प्राप्त हुई उसके आरम्भ की रचना हुई। वस्तुतः उपन्यास रचना की प्रेरणा है। अधिकांश विद्वान लाला श्रीनिवास दास के परीक्षागुरु को हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास मानते हैं इसकी रचना सन् १८८२ मे हुई थी।

(1) लाला श्रीनिवास दास
(2) किशोरीलाल गोस्वामी
(3) बालकृष्ण भट्ट (१८५५-१९१५)
(4) ठाकुर जगमोहन सिंह
(5) राधाकृष्णदास
(6) देवकीनन्दन खत्री
(7) गोपालराम गहमरी
(8) लज्जाराम शर्मा
(9)

सामाजिक ↓ भाग्यवती, परीक्षागुरु, बालकृष्ण भट्ट →

तिलिस्मी ऐय्यारी ↓ त्रिवेणी, मित्र बन्धु, हृदयहारिणी, कुटीरवासिनी, मालती ...

जासूसी ↓

रोमानी ↓

L 144/जयपुर/2006-08 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मधु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

:- कहानी :-

हिन्दी कहानी के सूत्र वैदिक साहित्य मे मिलते है। कथा आख्यान और उपाख्यान के नाम मे जो मनोरंजक कथाए थी उन्हे कहानी का आरम्भिक रूप माना गया है।

① लैला-मंजनू सीरि-फरहाद मुसलमानो की प्रेम कहानी है
② तोता मैना छबीली भटियारिन सारंग सदावृज जैसी कहानिया

① पूर्व प्रेमचन्द काल →
① सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन (1900)
② किशोरीलाल गोस्वामी ने इन्दुमती 1900
③ माधव प्रसाद मिश्र मे मन की चंचलता 1900
④ भगवानदीन ने प्लेग की चुडैल 1902
⑤ रामचन्द्र शुक्ल ग्यारह वर्ष का समय 1903
⑥ बंग महिला की दुलाई वाली 1907
⑦ प्रसाद की इन्दु कहानी 1909
  ∟ ग्राम -1912
⑧ राधिकारमण सिंह कानो मे कंगना 1913
⑨ प्रेमचन्द की पंच परमेश्वर 1916
⑩ चंद्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था 1915

पंजी. क्र. …/जयपुर/2004-05

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

मोबाइल : 9314618091

(संचालित मनु ओलियत वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)

…, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

नाटक

अन्य विधाओ की भांति ही नाटक साहित्य का भी आधु[निक] युग मे विकास हुआ संस्कृत नाटको की परम्परा के ह्रास के बाद नाटक के क्षेत्र मे एक बहुत बडा अभा[व] सामने आया हिन्दी के आदिकाल और मध्यकाल मे नाटक को विशेष प्रश्रय नही मिला यह ठीक है कि लोक जीवन मे पारम्परिक नाट्य प्रचलित रहा और अनेक नाटक भी लिखे गए है भारतेन्दु से पूर्व ब्रज भा[षा] मे नाटक लिखे गए है जैसे प्राणचंद कृत रामायण महानाटक हृदयराम पंजाबी कृत हनुमन्नाटक बनारसीदास जैन कृत समय सार नाटक नेवाज कृत शकुन्तला विश्वनाथ सिंह कृत आनंद रघुनंदन आदि इस प्रकार 1610 से लेकर 1850 ई की अवधि मे लिखे लगभग 14 नाटक प्राप्त हुए है।

भारतेन्दु और उनका युग →

भारतेन्दु ने नाट्य रचना के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण …

अनुवाद | रूपान्तर | मौलिक रचना

भाषा → संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी

हर्षकृत रत्नावली, कांचन कवि धनंजय चंडीश के एक अंक का अनुवाद - पाखण्ड विडम्बन

कर्पूरमंजरी — प्राकृत से किया

अम्बिकादत्त व्यास →

देवकी नंदन त्रिपाठी —

शिवनंदन सहाय —

अवदेव —